चीन का दवा बाजार और बाघ संरक्षण

प्रमोद भार्गव

दुनिया में चीन बाघ के अंगों का सबसे बड़ा खरीददार है। यहां बाघ के अंगों से शराब और कामोत्तेजक दवाएं बनाई जाती हैं। इसलिए वन्य प्राणियों के अंतर्राष्ट्रीय तस्कर एक बाघ को मारने की कीमत साठ लाख रुपए तक दे देते हैं। गौरतलब है कि चीन अपने यहां सख्ती से बाघ संरक्षण नीतियों को अमल में ला रहा है।

भारतीय जंगलों में इन तस्करों का जाल कितनी मज़बूती से बिछा है, यह इसी बात से पता चलता है कि टाइगर स्टेट का दर्ज़ा प्राप्त राज्यों में से अकेले मध्यप्रदेश में पिछले ढाई साल के दौरान संरक्षित वनों में 37 बाघ मार गिराए गए। आज़ादी के समय भारत में बाघों की संख्या 40 हज़ार के करीब थी; वह अब घटकर केवल 1411 ही रह गई है। गैर सरकारी आंकड़ा तो एक हज़ार से भी नीचे है।

वन और वन्य प्राणियों के आचरण और लक्षणों के बुनियादी जानकार, पीपुल्स फॉर एनीमल्स के राजस्थान प्रभारी बाबूलाल जाजू का मानना है कि बाघ जंगलों के प्राकृतिक संरक्षक हैं, वे नहीं होंगे तो जंगल भी नहीं रहेंगे। इस कथन के मुताबिक हमारे यहां बाघ और जंगल दोनों एक साथ घट रहे हैं।

मध्यप्रदेश के राष्ट्रीय उद्यानों को कुछ समय पहले तक सबसे सुरक्षित अभयारण्यों के रूप में जाना जाता था लेकिन अब यहां के हालात बदतर हैं। सरिस्का की तरह यहां की पन्ना बाघ परियोजना से भी बाघ गायब हो चुके हैं। अब यहां एक भी बाघ नहीं है जबकि यहां 35 बाघ थे। हाल ही में यहां 2 बाघ भोपाल के वन विहार से लाकर छोड़े गए हैं। उद्यान इनकी ज़रूरी निगरानी भी नहीं कर पा रहा है।

बाघों का सबसे बड़ा आश्रय स्थल कान्हा राष्ट्रीय उद्यान है। यहां 127 बाघ थे लेकिन ताज़ा आंकडों के मुताबिक अब मात्र 60 रह गए हैं। बीते 2 साल के भीतर अकेले कान्हा में छह बाघ मरे पाए गए। जिनमें से दो को शिकारियों ने करंट लगाकर मारा। इसी प्रकार से, बांधवगढ़ में 45 बाघ थे, 30 रह गए; पचमढ़ी में भी 35 थे, 25 रह गए। यह सिलसिला अभी भी थमा नहीं है; हर माह बाघ मारे जाने की घटनाएं सामने आ रही हैं।

दरअसल अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में बाघ की खाल, हड्डियों, जननांगों और अन्य अंगों का मोल ऊंचा है और तस्कर वनकर्मियों को प्रलोभन राशि भी अच्छी देते हैं। इसलिए बाघ के आश्रय स्थल की सूचना देने पर ही वनकर्मियों के पौ बारह हो जाती है। यहां सवाल यह भी खड़ा होता है कि जब संरक्षित अभयारण्यों में ही बाघ सुरक्षित नहीं है तो वे बाघ कैसे सुरक्षित होंगे जिनका आवास व प्रजनन क्षेत्र अभयारण्यों के बाहर है। लगभग तीन चौथाई बाघ ऐसे ही जंगलों में रहते हैं। बाघ संरक्षण पर भारत सरकार अब तक छह सौ करोड़ रुपए खर्च कर चुकी है। इसके बावजूद वन अमले की नाकामी और बेईमानी के चलते शिकार का सिलसिला जारी है।

अकेले मध्यप्रदेश में बाघों को मारे जाने की यह फेहरिस्त बतौर बानगी थी। इस शिकार की पृष्ठभूमि में चीन का वह सेक्स बाज़ार है जहां बड़ी मात्रा में शक्ति व यौनवर्द्धक दवाओं की मांग है। दरअसल चीनी पुरुषों पर अब तक जितने भी कामेच्छा सम्बंधी सर्वे हुए हैं उनसे ज़ाहिर हो रहा है

कि चीनियों में बड़ी तेज़ी से कामजन्य ऊर्जा का क्षरण हुआ है। निरोध बनाने वाली अंतर्राष्ट्रीय ड्यूरेक्स कंपनी ने अपने एक सर्वे की रिपोर्ट सार्वजनिक करते हुए बताया था कि चीन विश्व के सबसे कम यौन सक्रिय देशों में से एक है। इस सर्वे को काम बाज़ार में एक औज़ार के रूप में इस्तेमाल किया गया और नीम-हकीमों ने पारंपरिक चीनी नुस्खों की मांग एकाएक बढ़ा दी। इसके चलते एक पूरे मरे बाघ की कीमत 60 लाख रुपए तक पहुंच गई। बाघ की खाल का मूल्य 10 लाख, खोपड़ी 25 लाख, मांस, रक्त, यकृत, पित्त, नाखून और हड्डियों की कीमत लाखों में है। बाघ के मांस व लिंग को गलाकर बनाया गया एक कप सूप 20 हज़ार रुपए में बिकता है। बाघ के आंतरिक अंगों व हड्डियों को वाष्पीकृत करके मदिरा भी बनाई जाती है जिसकी एक बोतल का दाम 50 से 75 हज़ार रुपए तक है। इसे 'टाइगर वाइन' कहा जाता है जिसकी युरोप व अरब देशों में ज़बर्दस्त मांग है। चीन के शंघाई नगर में बाघ की हड्डियों से चूर्ण बनाया जाता है जिसकी कीमत 8 से 10 हज़ार रुपए प्रति किलोग्राम तक है। यह पावडर यौन व शक्तिवर्द्धक दवाइयां बनाने के काम आता है।

इन दवाइयों के अतिरिक्त बाघों की हड्डियों से निर्मित भस्म का तिब्बती दवाओं में भी बड़ी मात्रा में इस्तेमाल होता है। बताते हैं यह भस्म दमा और गठिया के उपचार में काफी कारगर है। बाघ की मूंछ के बाल व नाखून का उपयोग तंत्र विद्या के साधक खूब करते हैं, काली छायाओं से बचने के लिए। इनसे ताबीज़ व गंडे बनाए जाते हैं। तिब्बत के अहिंसक बौद्ध समुदाय के नवधनाढ्य भी अपनी कोठियों की बैठक में बाघ की खाल टांगकर वैभव का प्रदर्शन करने लगे हैं। इनकी महिलाओं में बाघ की हड्डियों व नाखूनों से बने आभूषणों पहनने का चलन भी बढ़ रहा है। हालांकि तिब्बतियों के धर्मगुरु दलाई लामा के आह्वान पर कुछ नव धनाढ्यों ने खालें व आभूषण त्याग देने का आदर्श भी प्रस्तुत किया था। बाघों की तर्ज़ पर तेंदुओं के मारे जाने का सिलसिला भी शुरू हो गया है। तेंदुए के अंग प्रत्यंग भी इसी तरह प्रयोग में लाए जा रहे हैं। फिलहाल सेक्स के बाज़ार में एक तेंदुए की कीमत दस लाख रुपए है।

चीन में पौरुष को ताकतवर बनाने के लिए पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में अनेक वन्य जीवों के अंगों का प्रयोग किया जाता है। इनमें हिरण की कस्तूरी, शार्क मछली के पंख, हाथी व गेंडे के सींग, मगर व घड़ियाल के जननांग और भालू का पित्त शामिल हैं। नीम हकीम इनसे मामूली बीमारियों से लेकर असाध्य रोगों तक के इलाज़ का दावा करते हैं। ऐसे किसी दावे की वैज्ञानिक प्रामाणिकता अभी तक साबित नहीं हुई है। ऐसी मान्यता है कि यदि शार्क मछली को कभी कैंसर नहीं होता तो शार्क के पंखों से बने सूप को पीने से इंसान को भी कैंसर नहीं होगा अथवा शार्क का सूप पीने से कैंसर ठीक हो जाएगा।

चीन ने वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों को संरक्षण देने के नज़रिए से ही 'टाइगर फार्म'खोले हुए हैं। ये फार्म मुर्गी व खरगोश पालन केंद्रों की तरह ही विकसित किए गए हैं। चीन के इन फॉर्मों में बाघों की संख्या छह हज़ार से ऊपर पहुंच गई है। कृत्रिम गर्भाधान के ज़रिए यहां प्रति वर्ष आठ-नौ सौ बाघ बढ़ जाते हैं। इन फार्मों में जिन व्यापारियों ने पूंजी निवेश किया हुआ है, वे बाघ के शिकार पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंध के कारण बाघों का व्यावसायिक दोहन नहीं कर पा रहे। केवल प्राकृतिक रूप से मरे बाघ के अंगों से दवा व मदिरा बनाने की छूट मिली हुई है। इसलिए चीन टाइगर फार्मिंग को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थन हासिल करने में भी लगा है। यदि टाइगर फार्मिंग वैधानिक हो गई, तो इसकी आड़ में पूरी दुनिया से बाघों का सफाया तेज़ हो जाएगा।

बाघ के अंगों के व्यावसायिक इस्तेमाल व शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध के बावजूद इण्डोनेशियाई बाघों की तीन प्रजातियां - वाली, कैस्पेन और जावा - बीसवीं सदी में खत्म हो गईं। दक्षिणी चीनी बाघ प्रजाति भी तेज़ी से विलुप्त हो रही है। पौरुष के आकांक्षी चीनियों ने भारतीय बाघ के अस्तित्व को भी खतरे में डाल दिया है। बाघों के शिकार में कुछ सालों के भीतर एकाएक आई तेज़ी को प्रतिबंधित करने के लिए भारत सरकार को भी अपनी शिथिलता दूर करनी होगी अन्यथा आधी इक्कीसवीं सदी बीतते-बीतते चीते की तरह बाघ भी पूरी तरह लुप्त हो जाएंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***